BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पाँच

मैथिली साहित्यक इतिहास
(आधुनिक काल)

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता) G/T
मैथिली विभाग
R.S.J. College - Rajnagar
Madhubani (LNMU)

चन्दा झा

आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक कवीश्वर चन्दाझा अधिकांश पद मैथिलीक प्राचीन काव्य-रीतिक लिखने छथि- अधिकांश महेशवानी, अन्य देवीदेवताक प्रसंगहु, मुदा शृंगाररस अत्यल्प।

हिनक जन्म २ जनवरी, 1831 ई० मे भेल पिण्डारुछ गाममे। हिनक पिता कुलाचिन्त महा महोपाध्याय भोला झा। हिनकामे कवित्व -शक्ति बाल्यवस्थाहिसँ विद्यमान छल। शिक्षा-लाभ करबाक पश्चात ई नरहन राजाक दरबारमे दस-पन्द्रह वर्ष धरि रहलाह, पाछाँ म० लक्ष्मीश्वर सिंह हिनक यश सुनि हिनका अपन दरबारक शोभा बनाओल। ओहि दरबारमे ओ प्रत्येक दिन तीन-चारि पद बनाए महाराजकेँ सुनाओल करथि। हिनक रचनाकेँ ओहि दरबारक गवैआसभसँ गवाओल जाइत छल। चन्द्रपद्यावली, महेशवाणी आदि पदसंग्रहमे राग रागिणीक जे उल्लेख अछि, से तदनुसारे।

हिनक पदावलीमे महेशवानीक आधिक्यक कारण अछि हिनक शिवभक्ति। ई प्रत्यह अपन बनाओल पद गाबि शिवपूजा कयल करथि। हिनक महेशवानीक संग्रह पर डॉ० अमरनाथ झा प्रकाशित करौने छलाह, जकर मैथिली साहित्यमे अपन

विशिष्ट स्थान अछि।

चन्दा झा बड़ उचित-वक्ता छलाह। मैं अप्रत्यक्ष रूपे पिण्डारक अनुयायीलोकनि केँ हिनका बड़ सताओलनि। अतमे ओ पिण्डारक छोड़ि ज्यौं भगवान कमलेश्वरकेँ संग लए अपन लोहुर गाममे जा बसलाह। पिण्डारक छोड़बा कालक निम्नलिखित पंक्ति ओहि घटनाक निर्देश करैत अछि:-

अब नहि उचित पिण्डारक वास, उपजत चालिस जनकी केर पास।
शाइत अनुचित ई धरा लेल, दुइ पण्डित ठाढ़ कैं देल।।
दैवन दैवन भेल रक्षितापा, चानीक कलश सेहो लेल अनिया।
बाबू मिसर गोबरक पात, तीनू कोसकेँ छोड़ि जात।।

Sarvjit Kumar